यीशु की ओर से एक प्रेम पत्र

मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ। आप मेरे लिए बहुत ही कीमती और बहुमूल्य हो। मैं हमेशा आपके बारे में सोचता हूँ और आपके लिए मेरे पास अद्‌भुत योजनाएँ है। जो कल्पनाएँ और योजनाएँ आपके लिए मेरे पास है वह आपको एक भविष्य और आशा देने के लिए है और यह आपके माँगने और सोचने से कही ज्यादा बढ़कर है। (यूहन्ना 3:16-17; यिर्मयाह 29:11; भजन संहिता 139:1-18; 103:1-18; इफिसियों 3:20; यशायाह 55:8, 9)

आप मेरी संतान है। आप मेरे हो क्योंकि मैंने न केवल आपको रचा है, बल्कि आपको छुड़ाया भी है जब मैं सारे संसार के पापों के लिए क्रूस पर मरा। (यूहन्ना 1:1-4; 14; 3:16, 17; कुलुस्सियों 1:12-16; गलातियों 3:10-13; 4:4, 5; 1 यूहन्ना 2:2)

परमेश्वर आपके विरूद्ध में आपके पापों को नहीं गिनता है

मेरे सिद्ध जीवन और मृत्यु के द्वारा, आपका परमेश्वर के साथ मेल मिलाप हो गया है। यह मायने नहीं रखता कि आप कौन है और आपने क्या किया है। परमेश्वर आपके विरूद्ध में आपके पापों को नहीं गिनता है। आप जैसे हो वैसे ही परमेश्वर के पास आने के लिए आज़ाद हो और उससे मेलमिलाप करने के लिए भी आज़ाद हो। (2 कुरिन्थियों 5:19-21; रोमियों 12:1)

मैं आपको वही बात कहूँगा जो मैंने उस स्त्री से कही थी जिसने व्यविचार किया था। मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा और फिर पाप न करना। आप मेरे बिना शर्त वाले प्यार को जो आपके लिए है, उसे अनुभव करने के लिए स्वतंत्र हो और आप अपने पाप और दर्द के जीवन की छोड़ सकते हो। (यूहन्ना 8:11; रोमियों 2:4, 5:18; 6:14-16; 8:1)

जब आप मुझे पुकारोगे, मैं आपको उत्तर दूँगा। जब आप मुझे पूर्ण मन से खोजोगे तो मुझे पाओगे। क्योंकि मैं आपमें पाये जाने के लिए व्याकुल हूँ। जब आप मुझे अनुमति दोगे तो मैं आपके साथ अपना घर बनाऊँगा या आपके साथ

वास करूँगा (यिर्मयाह 29:12, 13; मत्ती 11:28-30; यूहन्ना 14:23; प्रकाशितवाक्य 3:20)

मैं आपसे अनन्त प्रेम करता हूँ। उसे कोई बदल नहीं सकता। जब आपके चोट/दुःख पहुँचता है तो मैं भी दुःखित होता हूँ, जिस तरह से माता-पिता उनके बच्चे के दुःख से दुखित होते है। (यिर्मयाह 31:3; रोमियों 8:31-39; मत्ती 23:37-39; 25:34-35; होशे 11:1-8)।

सभी मनुष्यों के दुःख और पीड़ा अन्ततः आदम और हव्वा के उस चुनाव का परिणाम है जब उन्होंने बुराई को सीखने का चुनाव किया। जब उन्होंने पाप किया, मैं तुरंत ही संसार का उद्धारकर्त्ता होने के लिए आगे आ गया। (उत्पत्ति 2:15-17; 3; प्रकाशितवाक्य 13:8; रोमियों 5:12-18; यशायाह 53:4-6; यूहन्ना 1:29; 4:42; 2 तीमुथियुस 1;9; 1यूहन्ना 2:2)।

टूटे हुओं को चंगा करना और लोगों को आज़ाद/स्वतंत्र करना

मेरे सिद्ध जीवन और मृत्यु, मैं मानवजाति को अंधकार के राज्य से निकालकर, हर एक को अनन्त जीवन का वारिस बनाने के योग्य था। जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति मेरे साथ अभी और सदा सर्वदा के लिए जीने का चुनाव कर सकता है या फिर पाप और बुराई के साथ बने रहने का भी चुनाव कर सकता है। (कुलुस्सियों 1:12-14; रोमियों 5:18; 2 कुरिन्थियों 5:14-21; 1 यूहन्ना 5:10-11; यूहन्ना 1:9-13; 3:16-20)

जब मैं इस पृथ्वी पर था। मेरा मिशन या उद्धेश्य कंगाले को सुसमाचार सुना, टूटे हुओं को चंगा करना और पाप में फंसे लोगों को आज़ाद करना था। शैतान ने मेरे बारे में बहुत सारे झूठ बोले ताकि लोग मुझे अस्वीकार कर दे। वह जितना ज्यादा हो सके लोगों की चोरी करने, घात करने और उन्हें नष्ट करने की कोशिश करता है। मैं इसलिए आया कि हर एक व्यक्ति बहुतायत के जीवन का अनुभव कर सके जिसकी इच्छा प्रांरभ से ही मानवजाति के लिए करी गई थी (लूका 4:18; प्रकाशितवाक्य 12:7-9; 1 पतरस 5:8; यूहन्ना 8:31-36, 44; 10:10)

आप जैसे हो, वैसे ही मैं आप को मेरे पास आने के लिए आमंत्रित करता हूँ। मैं आपको आपके सभी दर्द और असफलता के साथ स्वीकार करूँगा। वास्तविकता में, स्वर्ग का राज्य "आत्मा में दीन या निर्धन" का है, जो लोग अपने टूटेपन को पहचान जाते हैं और जिन्हें मेरी आवश्यकता उनके उद्धारकर्त्ता के रूप में होती है। (मत्ती 11:28-30; 5:5; रोमियों 12:1; भजन संहिता 51:17)

जब आप मुझे आपके उद्धारकर्त्ता और प्रभु होने के लिए आमंत्रित करते है, आप "नया जन्म" प्राप्त करेंगे। पवित्र आत्मा सारे सत्य में आपको अगुवाई करेगा और सत्य आपको स्वतंत्र/आज़ाद करेगा। जैसे-जैसे आप शैतान के झूठों (असत्यों) को बाइबल के सत्यों के साथ बदलते हैं, आपके जीवन बदल जाएगा। आप भय, दोष और लज्जा से आज़ादी को अनुभव करेंगे (यूहन्ना 1:12-13; 3:5-6; 8:31-36; 16:13; रोमियों 12:2; 2 कुरिन्थियों 3:18; 2 तीमुथियुस 1:7; 1 यूहन्ना 1:9; 3:1; 4:18)

आप जीवन में नए अर्थ और उद्धेश्य को खोज पाएंगे जब आप अपनी कहानी दूसरों से बाँटोगे और उन्हें मेरा प्रेम अनुभव करने के लिए आमंत्रित करने और उनका परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करवाओगे। (मरकुस 4:20; 5:19-20; प्रकाशितवाक्य 12:11; 2 कुरिन्थियों 5:19-20)

आप आमंत्रित है, कृप्या आए

मैं कभी भी आपको सत्य या आशीष को ग्रहण करने के लिए, जो मैं आपको देना चाहता हूँ, कभी भी विवश या मज़बूर नहीं करूँगा। यदि आप नहीं उन्हें चाहते हो; मैं आपको उस मार्ग पर चलने की अनुमति दूँगा जिसको आप चुनेंगे, यद्यपि यह बात मेरे लिए दुःख और दर्द को लेकर आएगी। फिर भी मैं आपका इंतज़ार करूँगा कि आप मुझे मदद के लिए पुकारे। जब आप ऐसा करोगे, मैं अपनी क्षमा का आपको आश्वासन दूँगा और उस टूटेपन से चंगाई पाने को अनुभव करने में आप की मदद करूँगा जो आपके पापमय चुनावों के कारण हुआ है। (नीतिवचन 14:12; मत्ती 7:13-14; याकूब 1:14-15; रोमियों 1:18-28; भजन संहिता 107; इब्रानियों 12:5-11; प्रकाशितवाक्य 3:19-20, लूका 4:18; मत्ती 5:3-12; 1 यूहन्ना 1:9)